# रघुवीर गद्यम्

श्रीमान् वेङ्कट नाथार्यः कवितार्किक केसरी।
वेदान्ता चार्य वर्योमे सन्निधत्तां सदाहृदि॥

जयत्याश्रित संत्रास ध्वान्त विध्वंसनोदयः।
प्रभावान् सीतया देव्या परम-व्योम भास्करः॥

जय जय महावीर !
महाधीर धौरेय !
देवासुर समर समय समुदित निखिल निर्जर निर्धारित निरवधिकमाहात्म्य !
दशवदन दमित दैवत परिषदभ्यर्थित दाशरथि-भाव !
दिनकर कुल कमल दिवाकर !
दिविषदधिपति रण सहचरण चतुर दशरथ चरम-ऋण विमोचन !
कोसल-सुता कुमार-भाव कञ्चुकित कारणाकार !
कौमार केलि गोपायित कौशिकाध्वर !
रणाध्वर धुर्य भव्य दिव्यास्त्र बृन्द वन्दित !
प्रणत जन विमत विमथन दुर्ललितदोर्ललित !
तनुतर विशिख विताडन विघटित विशरारु शरारु ताटका ताटकेय !
जड-किरण शकल-धरजटिल नट पति-मकुट नटन-पटु विबुध-सरिद्-अति-बहुल
मधु-गलन ललित-पद नलिन-रज-उप-मृदित निज-वृजिन जहदुपल-तनु-रुचिर
परम-मुनि वर-युवति नुत !
कुशिक-सुतकथित विदित नव विविध कथ !
मैथिल नगर सुलोचना लोचन चकोर चन्द्र !
खण्ड-परशु कोदण्ड प्रकाण्ड खण्डन शौण्ड भुज-दण्ड !

चण्ड-कर किरण-मण्डल बोधित पुण्डरीक वन रुचि लुण्टाक लोचन !

मोचित जनक हृदय शङ्कातङ्क !

परिहृत निखिल नरपति वरण जनक-दुहित कुच-तट विहरण समुचित करतल !

शतकोटि शतगुण कठिन परशु धर मुनिवर कर धृत दुरवनम-तम-निज

धनुराकर्षण प्रकाशित पारमेष्ठ्य !

क्रतु-हर शिखरि कन्तुक विहृतिमुख जगदरुन्तुद जितहरिदन्त-दन्तुरोदन्त

दश-वदन दमन कुशल दश-शत-भुज नृपति-कुल-रुधिरझर भरित पृथुतर

तटाक तर्पित पितृक भृगु-पति सुगति-विहति कर नत परुडिषु परिघ !

अनृत भय मुषित हृदय पितृ वचन पालन प्रतिज्ञावज्ञात यौवराज्य !

निषाद राज सौहृद सूचित सौशील्य सागर !

भरद्वाज शासनपरिगृहीत विचित्र चित्रकूट गिरि कटक तट रम्यावसथ !

अनन्य शासनीय !

प्रणत भरत मकुटतट सुघटित पादुकाग्र्याभिषेक निर्वर्तित सर्वलोक योगक्षेम !

पिशित रुचि विहित दुरित वल-मथन तनय बलिभुगनु-गति सरभसशयन तृण

शकल परिपतन भय चकित सकल सुरमुनि-वर-बहुमत महास्त्र सामर्थ्य !

द्रुहिण हर वल-मथन दुरालक्ष्य शर लक्ष्य !

दण्डका तपोवन जङ्गम पारिजात !

विराध हरिण शार्दूल !

विलुलित बहुफल मख कलम रजनि-चर मृग मृगयारम्भ संभृतचीरभृदनुरोध !

त्रिशिरः शिरस्त्रितय तिमिर निरास वासर-कर !

दूषण जलनिधि शोशाण तोषित ऋषि-गण घोषित विजय घोषण !

खरतर खर तरु खण्डन चण्ड पवन !

द्विसप्त रक्षः-सहस्र नल-वन विलोलन महा-कलभ !

असहाय शूर !

अनपाय साहस !

महित महा-मृथ दर्शन मुदित मैथिली दृढ-तर परिरम्भण विभवविरोपित
विकट वीरव्रण !
मारीच माया मृग चर्म परिकर्मित निर्भर दर्भास्तरण !
विक्रम यशो लाभ विक्रीत जीवित गृध्र-राजदेह दिधक्षा लक्षित-भक्त-जन दाक्षिण्य !
कल्पित विबुध-भाव कबन्धाभिनन्दित !
अवन्ध्य महिम मुनिजन भजन मुषित हृदय कलुष शबरी मोक्षसाक्षिभूत !
प्रभञ्जन-तनय भावुक भाषित रञ्जित हृदय !
तरणि-सुत शरणागतिपरतन्त्रीकृत स्वातन्त्र्य !
दृढ घटित कैलास कोटि विकट दुन्दुभि कङ्काल कूट दूर विक्षेप दक्ष-दक्षिणेतर
पादाङ्गुष्ठ दर चलन विश्वस्त सुहृदाशय !
अतिपृथुल बहु विटपि गिरि धरणि विवर युगपदुदय विवृत चित्रपुङ्ख वैचित्र्य !
विपुल भुज शैल मूल निबिड निपीडित रावण रणरणक जनक चतुरुदधि विहरण चतुर
कपि-कुल पति हृदय विशाल शिलातल-दारण दारुण शिलीमुख !
अपार पारावार परिखा परिवृत परपुर परिसृत दव दहन जवन-पवन-भव कपिवर
परिष्वङ्ग भावित सर्वस्व दान !
अहित सहोदर रक्षः परिग्रह विसंवादिविविध सचिव विप्रलम्भ समय संरम्भ समुज्जृम्भित
सर्वेश्वर भाव !
सकृत्प्रपन्न जन संरक्षण दीक्षित !
वीर !
सत्यव्रत !
प्रतिशयन भूमिका भूषित पयोधि पुलिन !
प्रलय शिखि परुष विशिख शिखा शोषिताकूपार वारि पूर !
प्रबल रिपु कलह कुतुक चटुल कपि-कुल कर-तलतुलित हृत गिरिनिकर साधित
सेतु-पथ सीमा सीमन्तित समुद्र !

द्रुत गति तरु मृग वरूथिनी निरुद्ध लङ्कावरोध वेपथु लास्य लीलोपदेश
देशिक धनुर्ज्यार्घोष !
गगन-चर कनक-गिरि गरिम-धर निगम-मय निज-गरुड गरुदनिल लव गलित
विष-वदन शर कदन !
अकृत चर वनचर रण करण वैलक्ष्य कूणिताक्ष बहुविध रक्षो बलाध्यक्ष वक्ष कवाट
पाटन पटिम साटोप कोपावलेप !
कटुरटद् अटनि टङ्कृति चटुल कठोर कार्मुक !
विशङ्कट विशिख विताडन विघटित मकुट विह्वल विश्रवस्तनयविश्रम समय
विश्राणन विख्यात विक्रम !
कुम्भकर्ण कुल गिरि विदलन दम्भोलि भूत निःशङ्क कङ्कपत्र !
अभिचरण हुतवह परिचरण विघटन सरभस परिपतद् अपरिमितकपिबल जलधिलहरि
कलकल-रव कुपित मघव-जिदभिहनन-कृदनुज साक्षिक राक्षस द्वन्द्व-युद्ध !
अप्रतिद्वन्द्व पौरुष !
त्रयम्बक समधिक घोरास्त्राडम्बर !
सारथि हृत रथ सत्रप शात्रव सत्यापित प्रताप !
शितशरकृतलवनदशमुख मुख दशक निपतन पुनरुदय दरगलित जनित दर
तरल हरि-हय नयन नलिन-वन रुचि-खचित निपतित सुर-तरु कुसुम
विततति सुरभित रथ पथ !
अखिल जगदधिक भुज बल वर बल दश-लपन लपन दशक लवन-जनित
कदन परवश रजनि-चर युवति विलपन वचन समविषय निगम शिखर
निकर मुखर मुख मुनि-वर परिपणित !
अभिगत शतमख हुतवह पितृपति निर्ऋति वरुण पवन धनदगिरिशप्रमुख
सुरपति नुति मुदित !
अमित मति विधि विदित कथित निज विभव जलधि पृषत लव !
विगत भय विबुध विबोधित वीर शयन शायित वानर पृतनौघ !

स्व समय विघटित सुघटित सहृदय सहधर्मचारिणीक !

विभीषण वशंवदी-कृत लङ्कैश्वर्य !

निष्पन्न कृत्य !

ख पुष्पित रिपु पक्ष !

पुष्पक रभस गति गोष्पदी-कृत गगनार्णव !

प्रतिज्ञार्णव तरण कृत क्षण भरत मनोरथ संहित सिंहासनाधिरूढ !

स्वामिन् !

राघव सिंह !

हाटक गिरि कटक लडह पाद पीठ निकट तट परिलुठित निखिलनृपति किरीट
कोटि विविध मणि गण किरण निकर नीराजितचरण राजीव !

दिव्य भौमायोध्याधिदैवत !

पितृ वध कुपित परशु-धर मुनि विहित नृप हनन कदन पूर्वकालप्रभव शत गुण
प्रतिष्ठापित धार्मिक राज वंश !

शुच चरित रत भरत खर्वित गर्व गन्धर्व यूथ गीत विजय गाथाशत !

शासित मधु-सुत शत्रुघ्न सेवित !

कुश लव परिगृहीत कुल गाथा विशेष !

विधि वश परिणमदमर भणिति कविवर रचित निज चरितनिबन्धन निशमन निर्वृत !

सर्व जन सम्मानित !

पुनरुपस्थापित विमान वर विश्राणन प्रीणित वैश्रवण विश्रावित यशः प्रपञ्च !

पञ्चतापन्न मुनिकुमार सञ्जीवनामृत !

त्रेतायुग प्रवर्तित कार्तयुग वृत्तान्त !

अविकल बहुसुवर्ण हय-मख सहस्र निर्वहण निर्वर्तित निजवर्णाश्रम धर्म !

सर्व कर्म समाराध्य !

सनातन धर्म !

साकेत जनपद जनि धनिक जङ्गम तदितर जन्तु जात दिव्य गति दान दर्शित नित्य
निस्सीम वैभव !
भव तपन तापित भक्तजन भद्राराम !
श्री रामभद्र !
नमस्ते पुनस्ते नमः ॥

चतुर्मुखेश्वरमुखैः पुत्र पौत्रादि शालिने ।
नमः सीता समेताय रामाय गृहमेधिने ॥

कविकथक सिंहकथितं कठोत सुकुमार गुम्भ गम्भीरम् ।
भव भय भेषजमेतत् पठत महावीर वैभवं सुधियः ॥

कवितार्किकसिंहाय कल्याणगुणशालिने ।
श्रीमते वेङ्कटेशाय वेदान्तगुरवे नमः ॥

**********



Hosted by tripod